चित्र: कैरन हैडॉक

# पत्तों पर नाग-नागिन

कालू राम शर्मा

बरसात रह-रहकर मगर जमकर बरस रही थी। घरों की हर चीज़ में सीलन आ चुकी थी। चारों ओर डबरे लबालब भरकर बहना शुरू हो चुके थे। जिधर देखो, उधर कीचड़ मचा हुआ था। घनघोर बरसात की वजह से पूरा गाँव एक तरह से सुस्ता रहा था। पशुओं को घर में ही बाँधकर रखा गया था। मेंढकों के टर्राने का शोर दिन में भी सुनाई दे रहा था। एक डबरे में से कोई मेंढक टर्राता, तो दूसरी ओर से और ज़ोर-से दूसरे मेंढक के टर्राने का शोर होता। मानो मेंढकों में टर्राने की प्रतिस्पर्धा चल रही हो। डबरों में उगी हरी घास पर रंगबिरंगे ड्रेगनफ्लाय सुस्ता रहे थे। परिन्दे पेड़ों पर पत्तों की आहट में पनाह पा रहे थे।

भारी बरसात की वजह से गाँव का शहर से सम्पर्क पूरी तरह से टूट चुका था। नाले पर बनाई पुलिया कोई दो साल पहले ही ढह चुकी थी। पुलिया मरम्मत लायक भी नहीं बची थी। पुलिया को नए सिरे से बनाने की माँग की जा रही थी। पिछले दो दिनों से गाँव से दूध ले जाने वाले शहर नहीं जा पाए थे। इस वजह से भट्ठियों में दूध को उबालकर मावा बनाया जा रहा था। गाँव के कई स्त्री-पुरुष और बच्चे बीमारी में जकड़े हुए थे। गनी चाचा के बड़े भाई कँपकँपीदार बुखार में तप रहे थे। भारी बरसात में मरीज़ों को शहर के अस्पताल में ले जाना नामुमकिन था।

हर कोई घर में ही दुबका हुआ था। कुछ खास ज़रूरत पड़ने पर ही लोग-बाग घर से बाहर निकल रहे थे। नारंगी के आँगन में बच्चे चियों के खेल में मशगूल थे। उनके पास इमली के चियों की फाँक बना-बनाकर उनसे खेल खेलने के अलावा और कोई चारा नहीं था। आँगन में एक तरफ

कुत्ता अपने अगले दोनों पैरों को आगे निकालकर, उन पर सिर सटाकर, खेल रहे बच्चों की ओर ताक रहा था। गाँव के पुरुष चौपड़ और ताश के पत्ते खेलकर वक्त काट रहे थे।

नारंगी ने आँगन में से दूर देखा कि हरियाली ही हरियाली छाई हुई है। घर की बाहरी दीवार पर उग आए छोटे-से पौधे पर नारंगी की नज़र पड़ी। उसे छोटे-से पौधे की छोटी-छोटी पत्तियों पर कुछ सफेद-सी, महीन लकीर जैसी आकृतियाँ दिखाई दीं। नारंगी ने झुककर ध्यान से देखा तो उसे लगा कि पत्ती पर मानो नाग फन फैलाए हुए हो। उसने जल्द ही निगाह घुमाई और खेलने में लग गई।

## नाग-नागिन की अफवाह

इन दिनों पूरे देश में एक अजीब-सी अफवाह फैली हुई थी कि पौधों की पत्तियों पर नाग-नागिन की आकृति उभर आई है। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि किसी किसान ने नाग-नागिन के एक जोड़े को मार डाला। बस वे नाग-नागिन ही पत्तियों पर प्रकट हुए हैं। अफवाह ने कुछ ऐसा ज़ोर पकड़ा कि सब्ज़ी-बाज़ार में हरी सब्ज़ियों की कीमतें औंधे मुँह गिर गईं। जैसे-जैसे अफवाह फैलती गई, लोगों ने हरी सब्ज़ियाँ, खासकर पत्तेदार सब्ज़ियाँ खाना और खरीदना बन्द कर दीं। जो लोग ऐसी बातों पर यकीन नहीं करते थे, वे एक-दूसरे से पूछते कि आखिर मामला क्या है।

उधर अखबारों में भी ऐसी खबरें छपने लगीं। खबर के मुताबिक एक राज्य में एक छोटी-सी बात ने राई का पहाड़ बना डाला। लोगों में यह अफवाह फैली कि नाग देवता ने टमाटर और पालक की पत्तियों पर उभरकर एक नए अवतार का रूप धारण किया है। कुछ ने तो यहाँ तक कहानी गढ़ ली कि किसी ने एक नाग को मारकर पेड़ों पर फेंक दिया था इसलिए नाग देवता नाराज़ होकर बदला ले रहे हैं।

कई तरह की बातें हो रही थीं। कई तरह के अनुमान लगाए जा रहे थे। राज्यसभा में सवाल पूछा गया, "सरकार अफवाह को रोकने के लिए क्या कदम उठा रही है?" एक सांसद ने बताया कि उनके राज्य में इस अफवाह का व्यापक असर हुआ है। गाँवों में लोगों ने हरी सब्ज़ियाँ खाना छोड़ दिया है। ऐसे में महिलाओं की हालत और भी खराब है। महिलाओं को तो वैसे भी पर्याप्त और पौष्टिक खाना उपलब्ध नहीं होता।

मगर गाँव के अधिकांश लोग इन अफवाहों और खबरों से अछूते थे।

## साँप जैसी आकृति?

भारी बरसात की वजह से स्कूल की छुट्टी हो गई थी। मटके में रखे हुए मेंढक के टेडपोल के अवलोकन के लिए नारंगी और उसके साथी दिन में एक बार स्कूल ज़रूर जाते।

एक हाथ में हैंडलेंस लिए और दूसरे हाथ से टाट की बोरी को अपने सिर पर डाले हुए नारंगी स्कूल जा रही थी। इसरार, लच्छू और डमरू भी पीछे-पीछे आ रहे थे। स्कूल के पास बागड़ में नारंगी की नज़र पड़ी तो वहीं ठिठककर रुक गई और पत्तियों को देखने लगी। उसने देखा कि हरी-हरी पत्तियों पर वैसी ही नाग की आकृतियाँ बनी हुई हैं जैसी उसने उसके घर की दीवार पर छोटे-से पौधे पर देखी थीं। जितनी बड़ी पत्ती, उस पर उतनी ही बड़ी आकृति। किसी-किसी पत्ती पर तो एक से ज़्यादा आकृतियाँ।

अब तक इसरार, लच्छू और डमरू भी उसके नज़दीक आ चुके थे। नारंगी धीरे-से बोली, "देख रहे हो?"

"अब पत्तियों को क्या देखना। पत्ती वाला पाठ तो पूरा हो गया है।" लच्छू अपनी दोनों हथेलियों को आपस में बाँधकर उसमें अपनी साँस फूँक रहा था।

"अरे, मैं पत्ती पर साँप जैसी आकृतियों की बात कर रही हूँ।" नारंगी थोड़ा चिढ़कर बोली।

"अच्छा, तो पत्तों पर नाग महाराज आकर बैठ गए।" डमरू बोला।

"देख, साँप जैसी लकीरें तो दिख रही हैं ना? ये देख ना, इस टमाटर के पौधे की झालरदार पत्तियों पर कितने साँप बन गए हैं। मास्साब भी तो कहते हैं कि किसी भी चीज़ का अच्छे से अवलोकन किया करो। तो अपन अवलोकन ही तो कर रहे हैं।"

"ये टमाटर यहाँ बागड़ में क्या कर रहा है?" इसरार बोला।

चित्र: रंजित बालमुचु

डमरू बोला, "टमाटर हर कहीं उग आता है। अगर इस बागड़ में देखोगे तो और भी टमाटर मिल जाएँगे।"

"मगर सभी पत्तियों पर तो ऐसी लकीरें नहीं बनी हैं। देखो, ये बेशरम के पत्ते तो साबुत ही हैं। और वो देखो, पीपल के पत्ते भी एकदम साफ हैं।" इसरार ने उँगली से इशारा करते हुए बताया।

## वहीं स्कूल में...

स्कूल में मास्साब फाइलों में उलझे हुए थे। बीच-बीच में वे अपनी झबरीली और आधी काली, आधी सफेद मूँछों पर हाथ फेरते हुए कुछ सोचते हुए दिख रहे थे। उन्होंने नारंगी और उसकी टोली के साथियों को बागड़ के पास कुछ करते हुए देख लिया था।

नारंगी सहित सभी बच्चे स्कूल के बरामदे में आ चुके थे। स्कूल में आकर वे मटके में मेंढक के जीवन-चक्र के सेट किए प्रयोग के अवलोकन में जुट गए। अब तक अण्डों में से टेडपोल निकल आए थे। टोली के लोग देख रहे थे कि मटके में बीच में पत्थरों से बनाए टीले पर टेडपोल आ-आकर आराम फरमाते और फिर से तैरने लग जाते।

बच्चों का यह रोज़ का ही काम था। मेंढक के अण्डों में से निकले टेडपोल में होने वाले बदलावों के चित्र बनाना तथा उनको नोट करने का यह कार्य कोई एक महीने से चल रहा था। चाहे स्कूल की छुट्टी हो, मगर बच्चे अपनी-अपनी टोलियों में अवलोकन ज़रूर करते।

नारंगी ने सोचा कि अभी कोई फटाफट मेंढक बनने वाले तो हैं नहीं, बाद में भी अवलोकन किया जा सकता है।

वह वहाँ से उठी और फिर से बागड़ तक जाकर नाग वाली पत्तियाँ तोड़कर ले आई।

"देखो, वो पत्ती तोड़कर ले आई। अब वो सीधे मास्साब के पास ही जाएगी।" इसरार का अन्दाज़ा सही निकला।

"मगर इसमें कौन-सी नई बात है।" लच्छू टालते हुए बोला।

"मास्साब देखो, पत्ती पर नाग! ये तो बिना हैंडलेंस के ही साफ दिख रहा है।" नारंगी बोली।

मास्साब ने हमेशा की तरह किया, "हूँह..."

मास्साब के चेहरे पर अचरज के भाव थे। उन्होंने पत्ते को हाथ में लेते हुए उसको उलट-पलटकर देखा, "तो अब ये देखने की कोशिश करो कि आखिर यह मामला क्या है। क्या वजह हो सकती है इन आकृतियों की?" मास्साब मूँछों में से मन्द-मन्द मुस्कराते हुए बच्चों की हौंसला-अफज़ाई करने के अलावा कुछ ज़्यादा मदद और सुझाव देने की स्थिति में नहीं थे। दरअसल, मास्साब ने हाल ही के अखबार में पत्तों पर नाग-नागिन की खबरें ज़रूर पढ़ी थीं। परन्तु उन्हें कुछ भी नहीं सूझ रहा था। वे बच्चों की कुछ भी मदद करने की स्थिति में नहीं थे।

इतना कह मास्साब फिर से फाइलों के काम में मशगूल हो गए।

"मास्साब कभी भी जवाब नहीं देते। वे तो सब कुछ अपने पर ही छोड़ देते हैं।" इसरार खीजकर बोला।

बच्चे मास्साब के इस तरीके को

समझ चुके थे। वे जानते थे कि मास्साब सवाल का जवाब नहीं देते। इसके पीछे के कारण तो वे नहीं जानते थे मगर वे मास्साब की इस अदा के दीवाने ज़रूर हो गए थे। चन्दू बोला, "ये तो मास्साब का स्टाइल है।"

"तो फिर अपुन का भी स्टाइल छानबीन करना है। अपुन भी इसकी छानबीन करके ही दम लेगा।" नारंगी रोष में आकर बोली।

## घर में अवलोकन

नारंगी घर आ चुकी थी। घर की कच्ची दीवार पर उगे पौधे को जब नारंगी ने देखा तो उस पौधे का ठूँठ ही बचा था। वह मन ही मन बुदबुदायी, "बकरी को भी इसी पौधे को चरना था।"

नारंगी ने सोचा कि बड़ी पत्तियों पर अवलोकन करना ज़्यादा अच्छा होगा। उसने बाड़े में जाने के लिए पीछे का दरवाज़ा खोला मगर वहाँ कीचड़ मचा हुआ था। कीचड़ की वजह से उसने तय किया कि वह पौधों और उनकी पत्तियों को दरवाज़े में खड़े होकर ही देखेगी। उसके सामने धतूरे का पौधा था। पूरे पौधे पर पानी की बूँदें जमी हुई थीं जो मोतियों का एहसास करा रही थीं। धतूरे के सफेद फूलों को जब देखा तो उसको ऐसा लगा मानो वे उसकी ओर देखकर मुस्करा रहे हों। दरवाज़े की दहलीज़ पर बैठकर, आगे की ओर झुककर, उसने धतूरे की पत्तियों को छूने की कोशिश की। वह पूरी तरह से झुक गई। धतूरे की पत्तियों को बहुत ध्यान-से देखने की ज़रूरत नहीं पड़ी। उसे साफ तौर पर पत्तियों पर सर्पाकार आकृतियाँ बनी हुई दिखाई दे रही थीं।

उसने धतूरे की एक पत्ती को तोड़ा और पिछवाड़े के दरवाज़े को बन्द कर कुण्डी लगा दी।

अब नारंगी पत्ती लेकर आँगन में आ चुकी थी। उसके पिताजी खटिया पर लेटे हुए थे। उन्होंने नारंगी के हाथ में पत्ती को देखकर कहा, "वैज्ञानिक साहिबा, इस धतूरे की पत्ती में ऐसा क्या है जो इसे लेकर यहाँ-वहाँ घूम रही हो?"

नारंगी अपने पिताजी का व्यंग्य सुनकर सकपका गई। वह मन ही मन कह रही थी कि बड़े लोग अपने आपको समझते क्या हैं। उनको लगता है कि बच्चे तो नासमझ ही होते हैं।

करवट बदलते हुए नारंगी के पिताजी ने सामने के घर के आँगन में खटिया बुन रहे गनी चाचा को ज़ोर-से आवाज़ लगाकर बोला, "पत्तों पर बवाल मचा हुआ है। राज्यसभा तक में पत्तों पर बात कर रहे हैं।"

गनी चाचा और नारंगी के घर में दस फीट की गली का ही फासला था। गनी चाचा ने उधर से कहा, "सुना है, अखबारों में खबरें ज़ोर-शोर

से छप रही हैं। बाज़ार में पत्तेदार सब्ज़ियों के भाव बुरी तरह से गिर गए हैं।"

"अच्छा..." गनी चाचा की बात सुनकर नारंगी के पिताजी खटिया पर बैठ गए।

"ऐसा कोई पहली बार तो नहीं हुआ। ये तो पत्तों की बीमारी है। कुछ भी कहो, लोगों ने पत्तेदार सब्ज़ियाँ खाना बन्द कर दी हैं।" गनी चाचा अपने घर के आँगन में काम में मशगूल हो बातचीत किए जा रहे थे।

छत के खपरैलों से आँगन के बाहर गली में टपक रहे पानी की बूँदों में नारंगी ने धतूरे की पत्ती को ठीक-से धोकर देखा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि बाहर से कोई दाग लग गए हों। उसे पक्का हो गया कि पत्ती में अन्दरूनी ही कोई बात हुई है।

नारंगी सोच में डूबी हुई थी। सभी पत्तियों में तो ऐसे कोई निशान नहीं हैं। कुछ तो साफ-सुथरी ही थीं। फिर उसने बाड़े में लगे अकाव की मोटी पत्तियों पर ऐसी कोई आकृतियाँ या निशान नहीं देखे थे।

वह बुदबुदाई, "क्यों न गनी चाचा से बात की जाए।"

## गनी चाचा की मदद

अब तक लच्छू और इसरार भी आ चुके थे। तीनों गनी चाचा के पास पहुँच गए। उनकी खटिया बुनने का काम भी लगभग पूरा हो चुका था। बरसात बन्द हो चुकी थी मगर आसमान में बादल दौड़ लगा रहे थे। नीला आसमान कहीं-कहीं दिखता और फिर से बादल उसको ढँक लेते।

गनी चाचा उसी खटिया पर बैठ गए जिसको अभी-अभी रस्सी से बुना था। चाचा ने उन तीनों को भी खटिया पर बिठा लिया।

गनी चाचा तीनों बच्चों से ऐसे बात कर रहे थे मानो वे उनकी बराबरी के हों। "देखो, रेडियो में जो खबर आई है, उसके हिसाब से तो हालात खराब ही हैं। शहरों में तो हर घर में यही चर्चा हो रही है कि पत्तियों पर नाग-नागिन बने हुए हैं।"

गनी चाचा थे तो कम पढ़े-लिखे मगर दिमाग बड़ा तेज़-तर्रार था। वे बातों के धनी थे। छोटे से लेकर बड़ों से बड़ी तहज़ीब से पेश आते। उनका सोचने का ढंग भी निराला था। दुनिया से परे हटकर वे सोचते। इसकी चिन्ता किए बगैर कि लोग-बाग क्या कहेंगे, अपनी बात बेबाक तरीके से कहते। कई बार लोगों को गनी चाचा की बात करेले-सी कड़वी लगती मगर फिर भी लोग उन्हें और उनकी नसीहतों को सुनने को बेताब रहते।

"तो तुम ऐसा करो कि अपने आसपास की पत्तियों के अन्दर देखो कि आखिर साँप जैसे निशान किस चीज़ के हैं।" गनी चाचा की बात तीनों को सुहानी लगी।

नारंगी बोली, "अब तक तो हमने

पत्तियों को बाहर से ही अच्छे से देखा है...।"

"तो क्या करें अब...?" तीनों बच्चों के मुँह से एक ही सवाल निकला।

नारंगी सोचते हुए बोली, "ऐसा करते हैं कि पत्ती के अन्दर खोदकर देखते हैं।"

गनी चाचा कुछ गुनगुना रहे थे - "तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आँखन देखी..."

*चित्र: रंजित बालमुचु*

चाचा ने गुनगुनाना बन्द किया और बोले, "सूई चाहिए तो तुम्हारी चाची से ले लो। मगर हाँ, इस बात का खयाल रखना कि सूई लौटा ज़रूर देना। क्योंकि तुम्हारी चाची का तो खास हथियार है - सूई।"

नारंगी मुँह बनाकर बोली, "अब चाचा रहने भी दीजिए। हम इतने भी छोटे नहीं कि चाची की सूई को गुमा देंगे।"

गनी चाचा को एहसास हुआ कि नारंगी को बुरा लग गया। उन्होंने सफाई देना चाही तब तक तो नारंगी चाची की ओर सूई लेने को दौड़ पड़ी।

## सच्चाई के नज़दीक

उजाले में बैठकर नारंगी पत्ती को एक हाथ में पकड़कर सूई से कुरेद रही थी। आसपास लच्छू और इसरार हैंडलेंस लेकर झुककर बैठे हुए थे। तीनों ने मिलकर देखा कि जहाँ-जहाँ सफेद-सी लकीर बनी हुई है, उस पर एक महीन-सी फिल्म जैसी परत है। पत्ती पर सर्पाकार आकृति के पूँछ वाले सिरे से आगे की ओर कुरेदा गया। नारंगी नाग के फन तक कुरेदते हुए आ गई। इसरार ने हैंडलेंस सेट किया हुआ था।

"कुछ तो भी दिख रहा है। ऐसा लग रहा है कि कोई कीड़ा हो।" इसरार बोला।

"तो असलियत कुछ और ही है।" नारंगी बोली।

"तो हम सच्चाई के बहुत नज़दीक हैं।" लच्छू बोला।

"हमको स्कूल में रखे माइक्रोस्कोप में देखना चाहिए।" हैंडलेंस को साफ करके जेब में रखते हुए इसरार बोला।

कुरेदी हुई धतूरे की पत्ती की

नारंगी ने पुड़िया बना ली और अपनी फ्रॉक की बगल वाली जेब में रख ली।

"तो हमको अब फिर से स्कूल में चलना चाहिए। मास्साब अभी स्कूल में कागज़ों के काम में ही लगे होंगे।" नारंगी बोली।

इसरार ने सुझाया, "क्यों न भागचन्द्र और डमरू को भी बुला लिया जाए।"

"हाँ, तो हम इधर से जल्दी-जल्दी स्कूल पहुँचते हैं। तब तक तुम भी पहुँचो।" लच्छू बोला।

"अरे हाँ, उधर से पत्तों को तोड़ते हुए आना।" लच्छू चिल्लाकर बोला।

## फिर एक बार स्कूल में

नारंगी और लच्छू कीचड़ में लथपथ होकर स्कूल पहुँचे। उन्होंने रास्ते में से नाग की आकृति वाली अलग-अलग पत्तियों को तोड़ लिया था।

मास्साब अपने सभी कागज़ और फाइलों को समेट रहे थे। बच्चों को स्कूल की ओर आते देखकर उन्होंने सोचा कि अब कुछ देर के लिए रुकना भी पड़ सकता है।

"क्या बात है? इस वक्त क्यों मस्ती कर रहे हो?" मास्साब फाइलों को लोहे की पेटी में रखते हुए बोले।

"मास्साब! पत्ती के बारे में आपसे बात करनी है।" नारंगी बोलते हुए स्कूल के गेट की ओर देख रही थी जहाँ इसरार, डमरू और भागचन्द्र आते दिखाई दे रहे थे।

"ओहो, तो पूरी टीम ही यहाँ है।" मास्साब फिर से कुर्सी पर बैठ गए।



चित्रः रंजित बालमुचु

"गनी चाचा और मेरे पिताजी तो बातें कर रहे थे कि पत्तियों के बारे में राजनीति हो रही है। लोगों ने सब्ज़ी खाना बन्द कर दिया है।" नारंगी ने एक ही साँस में वह सब बोल दिया जो उसकी समझ में आया था।

मास्साब को ज़ोर की हँसी आ गई। नारंगी को लगा कि कहीं मास्साब उस पर तो नहीं हँस रहे हैं।

मास्साब सफाई देते हुए बोले, "माफ करना नारंगी, मैं तुम पर नहीं हँस रहा हूँ। असल में, गनी चाचा और तुम्हारे पिताजी ठीक ही कह रहे हैं।"

नारंगी ने अपनी फ्रॉक की बगल वाली जेब में से पत्ती की पुड़िया निकालकर खोली। मगर वह बारीक-सी चीज़ उसमें नहीं थी जो उसने सूई से कुरेदकर निकाली थी। नारंगी ने जेब में हाथ डाला और जेब के कोनों में नाखूनों से खुरचने लगी। उसके नाखूनों में कुछ धागों के रेशे ही आए। ज़ाहिर है कि वह कुरेदी हुई चीज़ अत्यन्त ही सूक्ष्म थी।

नारंगी निराश होकर बोली, "हमने पत्ती में सूई से कुरेदकर देखा था। वो तो कहीं गिर गया।"

मास्साब बोले, "कोई बात नहीं। किसी दूसरी पत्ती में कुरेदकर देख लिया जाए। ऐसा तो होता रहता है।"

## पत्ती की गुत्थी

लच्छू, नारंगी, इसरार, डमरू, भागचन्द्र और मास्साब नीचे फर्श पर सूखी जगह देखकर बैठ गए। माइक्रोस्कोप निकाला जा चुका था। पाँचों बच्चे और मास्साब खुद भी पत्तियों को अलग-अलग कुरेद रहे थे। भागचन्द्र और डमरू मास्साब की ओर देख रहे थे कि वे पत्ती को कैसे कुरेद रहे हैं।

मास्साब भागचन्द्र और डमरू की ओर देखकर बोले, "देखो, ईमानदारी की बात यह है कि मैं भी तुम जैसा ही हूँ। पहली ही बार यह प्रयोग कर रहा हूँ। तुम तो बड़े किस्मत वाले हो कि इस तरह के प्रयोग करने का मौका मिला है। मुझे तो ऐसा मौका अपने बचपन में कभी नहीं मिला। तो तुम मुझसे ज़्यादा होशियार हो।"

थोड़ा रुककर मास्साब फिर से बोले, "हालाँकि नारंगी, लच्छू और इसरार हमसे कहीं ज़्यादा होशियार हैं। इन्होंने तो एक बार अपने घर पर भी पत्ती को कुरेदकर देखा है।"

नारंगी ने बताया, "हमने पत्ती पर बने साँप की पूँछ की ओर से कुरेदना शुरू किया था, और धीरे-धीरे आगे की ओर बढ़ते गए।"

मास्साब बोले, "गुड!"

मास्साब की देखा-देखी भागचन्द्र भी बोला, "गुड!"

लच्छू के पास कुरेदने के लिए सूई नहीं थी। उसने सोचा कि क्यों न अलमारी में किट में रखे हुए बबूल के काँटे से यह काम किया जाए। दरअसल, होविशिका में बबूल के काँटे का फूल के विच्छेदन में इस्तेमाल, एक बड़ी खोज थी। जब स्कूलों में शिक्षक और बच्चों को सूई या आलपीन आदि उपलब्ध नहीं हो रही थी, ऐसे में एक बच्चे ने काँटे से फूल का विच्छेदन कर नवाचार कर डाला था। बबूल का काँटा सूई से भी ज़्यादा कारगर होता है।

भागचन्द्र चिल्लाया, "अरे देखो, ये

रहा कीड़ा!" पास में बैठे हुए मास्साब बोले, "इस बारीक-सी चीज़ को, जिसको तुम कीड़ा कह रहे हो, इसे धीरे-से काँच की पट्टी पर रखो और फिर माइक्रोस्कोप में सेट करके देखो।"

उधर से गनी चाचा लाठी के सहारे स्कूल में आकर मास्साब के बगल में बैठ चुके थे। बूढ़े गनी चाचा बच्चों को काम करते हुए बड़े ध्यान से देख रहे थे। और उनकी बातों को गौर से सुन रहे थे।

भागचन्द्र खुशी के मारे हाँफ रहा था। उसने देखा कि कुछ धागे-सा दिखाई दे रहा है। अब लच्छू अपनी काँच की पट्टी को माइक्रोस्कोप में देखते हुए बोला, "धागे जैसा ही कुछ दिख रहा है।" बारी-बारी से सभी ने सच्चाई अपनी आँखों से देख ली थी।

"वैसे इसकी लम्बाई कितनी होगी?" इसरार ने पूछा।

"नापकर देख लो न।" भागचन्द्र ने जवाब दिया।

इसरार ने बड़े ही प्यार से कहा, "मुझे पता है। मैं तो केवल सवाल उठा रहा हूँ। और मैं यही करने जा रहा हूँ।"

इसरार ने ग्राफ पेपर पर कीड़े को धीरे-से रखा और उसको हैंडलेंस से देखने लगा। कीड़ा अभी भी कुलबुला रहा था। कीड़े को नापना मुश्किल हो रहा था। असल में वह ग्राफ पेपर पर अपने को पूरा-का-पूरा समेट लेता। बहुत मशक्कत के बाद इसरार ने देखा कि वह लगभग एक-डेढ़ मिलीमीटर का होगा।

## सुलझते धागे

मास्साब ने अपने हाथ में से पत्ती और सूई को नीचे रखा, और बच्चों की ओर मुखातिब होकर बोले, "अगर अब तुमसे इस पूरे मामले में कोई पूछे तो तुम्हारा मत क्या होगा?"

भागचन्द्र बोला, "ऐसा क्यों होता है कि हमारे यहाँ पर बिना देखे-परखे कोई भी कुछ भी कह देता है?"

नारंगी बालों की लट को उँगली में लपेटकर बाहर की ओर देख रही थी। लच्छू बोला, "तो ये तो कीड़े का कमाल है। मगर ऐसी, नाग जैसी आकृति क्यों बन रही है?"

"हाँ, यही सवाल मैं भी पूछना चाह रहा था।" इसरार बोला।

"मेरे मन में तो यह सवाल उठ रहा है कि आखिर ये कीड़ा पत्ती के अन्दर कैसे घुसता होगा?" डमरू बोला।

नारंगी का भी एक सवाल था, "हर कहीं इतना हंगामा हो रहा है तो बड़ी-बड़ी संस्थाओं में बैठे हुए लोग कुछ करते क्यों नहीं?"

मास्साब बच्चों के सवालों को बड़े ही ध्यान से सुन रहे थे। स्कूल के बरामदे में अचानक ही चुप्पी छा गई थी। कई सारे सवाल वहाँ तैर रहे थे।

मास्साब ने बड़ी विनम्रता से कहा,

*चित्र में कीड़े का आकार काफी बड़ा करके दिखाया गया है।*

"देखो, अब इन सब सवालों के जवाब तुम्हारी किताबों में मिलने वाले नहीं हैं। और असल बात तो यह है कि मुझे भी पता नहीं हैं। इनके बारे में हम सबको सोचना होगा। जब हम किसी समस्या के बारे में ठीक-से और हिम्मत-से सोचते हैं तो चाहे जवाब न मिले, मगर उसके हल की ओर हम आगे बढ़ पाते हैं।"

वहाँ एक बार फिर से चुप्पी छा गई थी।

अब नारंगी बोलने को उतावली हो रही थी, "कीड़ा पत्ते के हरे रंग को ही खाता होगा। और खाते हुए आगे को खिसकता होगा। जैसे-जैसे आगे खिसकता जाता है वैसे-वैसे बड़ा होता जाता होगा। इसीलिए आखिरी में पत्ती पर लकीर चौड़ी हो जाती है।"

मास्साब खुश होकर बोले, "करेक्ट! ऐसा ही होगा। तुम बिलकुल सही सोच रही हो।"

डमरू ने पूछा, "तो क्या पत्तों पर नाग इसी साल हुए हैं या पहले भी होते थे? अगर पहले भी होते थे तो इसी साल इतनी अफवाह क्यों उड़ी?"

मास्साब बोले, "देखो, मेरा मानना है कि पत्तों पर हर साल ही ऐसी आकृतियाँ बनती होंगी। इस साल कुछ ज़्यादा ही पत्तों पर इन कीड़ों का असर हुआ है। इसकी कोई वजह हो सकती है। हो सकता है कि इस बार का मौसम कीड़ों को ज़्यादा सुहाना लग रहा हो।"

लच्छू को लगा मानो मास्साब कीड़ों की तरफदारी कर रहे हैं।

इसरार बोला, "इसका मतलब यह कि इस बरसात में कीड़े अधिक पनपे?"

"हाँ, ठीक कह रहे हो।" मास्साब बोले।

नारंगी बोली, "तो इस वजह से सब्ज़ी खाना बन्द ही कर देना ठीक है?"

गनी चाचा बीच में ही बोले, "नहीं, बिलकुल नहीं। इतना किया जा सकता है कि उन पत्तों को फेंक दिया जाए जिन पर कीड़े लगे हुए हैं। लोगों ने तो गिलकी, तुरई और दूसरी

सब्ज़ियों को खाना भी बन्द कर दिया है, जो गलत है। कल तक हमारे यहाँ भी अखबार आ जाएगा। और फिर अपने गाँव में भी इसी तरह की बातें होने लगेंगी। तो, तुम इस बात के लिए तैयार रहना कि असलियत बता सको।"

मास्साब ध्यानमग्न हो गए थे कि यह सब कुछ इस 'करके सीखने' वाले विज्ञान की ही देन है कि बच्चों ने पत्तों की बीमारी का राज़ पता कर लिया। यह वैसा ही काम किया जो किसी बड़े संस्थान के विशेषज्ञ करते हैं। बस फर्क इतना ही होता है कि उनको उस कीड़े और बीमारी के वैज्ञानिक पहलुओं के बारे में विस्तार से पता होता है। उन्हें उनके जीव वैज्ञानिक नाम पता होते हैं।

मास्साब का ध्यान टूटा। "अच्छा, एक काम तुम सभी मिलकर करो। इस अफवाह का भण्डाफोड़ करने वाली एक खबर खुद ही बनाओ। जो भी तुमने खोजबीन की, उसे लिखो। तुम यह मानकर लिखना कि मानो वह खबर अखबार में ही छपने वाली हो।"

सभी बच्चे एक-दूसरे के मुँह की ओर ताक रहे थे। उनके पास कुछ भी बोलने को शब्द नहीं थे।

गनी चाचा ने हौंसला बँधाया, "अरे, घबराना क्यों? गलती हो जाए तो मास्साब हैं तो। और फिर जब नारंगी और तुम जैसे बच्चे अगर असलियत का पता लगा सकते हो, तो कागज़ पर लिखना कौन-सी बड़ी बात है?"

मास्साब ने मन ही मन तय कर लिया था कि वे बच्चों द्वारा किए गए अनोखे कार्य का उल्लेख मासिक बैठक में ज़रूर करेंगे।

बरसात थमती दिख रही थी। हवा तेज़ हो चली थी। काले-भूरे बादलों के पर्दे पर सफेद बगुले पंखों को फैलाकर उड़ रहे थे। हवा के तेज़ झोंके बरसाती बूँदों को छितर-बितर करने में कामयाब हो रहे थे। बच्चों के चेहरों पर चमक थी। बच्चे, गनी चाचा और मास्साब घर की ओर रवाना हो गए।

---

**कालू राम शर्मा (1961-2021):** अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, खरगोन में कार्यरत थे। स्कूली शिक्षा पर निरन्तर लेखन किया। फोटोग्राफी में दिलचस्पी। *एकलव्य* के शुरुआती दौर में धार एवं उज्जैन के केन्द्रों को स्थापित करने एवं मालवा में विज्ञान शिक्षण को फैलाने में अहम भूमिका निभाई।